SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

राजी सेठ की कहानियों में निम्नवर्गीय जीवन की यथार्थता

सरिता भगत, (Ph.D.), हिंदी विभाग,
डॉ. राधाबाई शास. नवीन कन्या महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
सरिता भगत, (Ph.D.), हिंदी विभाग,
डॉ. राधाबाई शास. नवीन कन्या महाविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/02/2022
Revised on : -----
Accepted on : 18/02/2022
Plagiarism : 02% on 11/02/2022

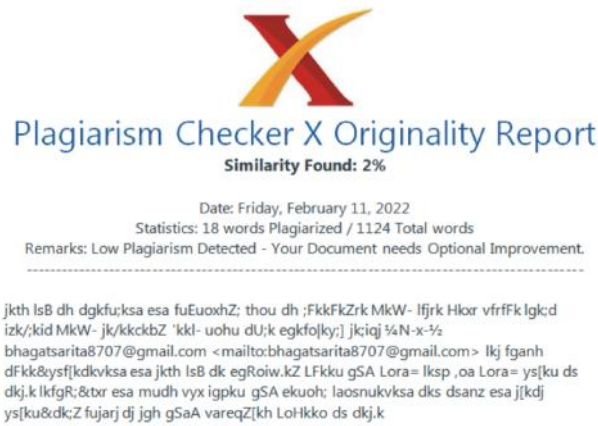
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Friday, February 11, 2022
Statistics: 18 words Plagiarized / 1124 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

jkth lsB dh dgkfu;ksa esa fuEuoxhZ; thou dh ;FkkFkZrk MkW- lfjrk Hkxr vfrfFk lgk;d izk/;kid MkW- jk/kkckbZ 'kkl- uohu dU;k egkfo[ky;] jk;iqj ¼N-x-½ bhagatsarita8707@gmail.com <mailto:bhagatsarita8707@gmail.com> lkj fganh dFkk&ysf[kdkvksa esa jkth lsB dk egRoiw.kZ LFkku gSA Lora= lksp ,oa Lora= ys[ku ds dkj.k lkfgR;&txr esa mudh vyx igpku gSA ekuoh; laosnukvksa dks dsanz esa j[kdj ys[ku&dk;Z fujarj dj jgh gSaA vareqZ[kh LoHkko ds dkj.k

शोध सार

हिंदी कथा–लेखिकाओं में राजी सेठ का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वतंत्र सोच एवं स्वतंत्र लेखन के कारण साहित्य–जगत में उनकी अलग पहचान है। मानवीय संवेदनाओं को केंद्र में रखकर लेखन–कार्य निरंतर कर रही हैं। अंतर्मुखी स्वभाव के कारण अंतर्द्वंद्व, कुंठा, संत्रास एवं तनाव का चित्रण उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। राजी सेठ ने समाज के निम्नवर्गीय जन–जीवन को अपनी खुली आँखों से देखा और उनकी छटपटाहट एवं पीड़ा को विभिन्न पात्रों के माध्यम से कहानी में अभिव्यक्त किया है। यह वर्ग अत्यंत ही शोषित, पीड़ित एवं बेरोजगारी के दंश से ग्रसित दिखाई देता है। निम्नवर्गीय जीवन का मार्मिक चित्रण उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द

हिंदी, स्वतंत्र, अंतर्मुखी, राजी सेठ.

प्रस्तावना

राजी सेठ की सभी कहानियों का अपना एक अलग ही संसार है, जो उन्हें अलग पहचान दिलाती है। उनकी कहानियाँ यथार्थ जीवन के कई ऐसे पहलुओं को उद्घाटित करती है, जो मर्मस्पर्शीय हैं। राजी सेठ निम्नवर्गीय जीवन के मर्म तक पहुँचकर, उन सभी मर्मों को कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं। राजी सेठ ने कहानियों के माध्यम से उच्चवर्ग द्वारा निम्नवर्ग के शोषण को चित्रित किया है। सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से पीड़ित उनकी अनेक कहानियाँ हैं। 'कब तक', 'घोड़े से गधे', 'यात्रा–मुक्त', 'तुम भी', 'स्त्री', 'यहीं तक', 'योग–दीक्षा', 'अमूर्त कुछ' आदि कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं को झकझोरती है। इन सभी कहानियों में निम्नवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है।

निम्नवर्ग का यथार्थ चित्रण

राजी सेठ की कहानियों में निम्नवर्ग के शहरी जीवन का यथार्थ चित्रण है। उन्होंने अपनी कहानियों में निम्नवर्ग के आर्थिक और सामाजिक समस्या को अभिव्यक्त किया है। राजी सेठ की कहानियों में संपन्न लोगों द्वारा गरीबी–निवारण एवं उच्च शिक्षा देने का वादा किया जाता है, योजनाएँ बनाई जाती हैं, किंतु उन योजनाओं का लाभ संपन्न व्यक्तियों को ही मिलता है, इस प्रकार निम्नवर्गीय लोग जहाँ–के–तहाँ हाथ धरे–के–धरे रह जाते हैं। इसी प्रकार कहानी 'घोड़ों से गधे' है, जिसमें उच्चवर्गीय समाज–सेवी संस्था द्वारा गरीबी–निवारण एवं बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कई बड़ी योजनाएँ बनाई जाती है, गधे से घोड़े बनाने का ख्वाब दिखाया जाता है। ऐसे ही सपने दीनू नामक बालक को दिखाया जाता है, किंतु वे उसकी आर्थिक कमजोरी का लाभ उठाते हैं। पढ़ाई के बदले दिन और रात दीनू से काम करवाया जाता है। दीनू अपनी आर्थिक स्थिति के कारण नहीं पढ़ पाता है और मिसेस सक्सेना के सामने– ''किताब–कापियों को लेकर उनके सामने पटकता बोला– रख लीजिए इन्हें मैं नहीं पढूँगा।... नहीं पढूँगा!! कभी नहीं, कभी नहीं।''[1] इस प्रकार निम्न स्तर के पात्र ऊँचे ख्वाब भी नहीं देख सकते हैं।

'तुम भी...?' कहानी में आर्थिक तंगी से जूझते निम्नवर्गीय परिवार की दयनीय दशा का चित्रण हुआ है। इस कहानी के नायम अमर को पारिवारिक जिम्मेदारी एवं ऊपर से आर्थिक तंगी ने अपने ही मालिक के घर चोरी करने के लिए मजबूर कर दिया है। जिस मालिक ने उसे नौकरी दी, उसी के घर वह चोरी करती है, जिससे वह अपनी बीमार माँ का इलाज एवं बच्चों की अच्छी परवरिश कर सके। अमर गरीबी के कारण न साग खा पाता है और न ही पेट भर खीर। वह अपनी पत्नी से कहता है– ''रख दे, सुबह बच्चे खा लेंगे।''[2] वह खाना तो चाहता है, किंतु बच्चों की चिंता के कारण वह अपनी चिंता छोड़ बच्चों के लिए सोचकर खाना नहीं खाता है।

परिवार के भरण–पोषण के लिए आमदनी बहुत कम होने के कारण 'योगदीक्षा' कहानी में नायिका योग–गुरु से योग की दीक्षा प्राप्त कर संपन्न घरों में जाकर योग का ट्यूशन देती है और उन्हीं रुपयों से घर का निर्वाह करती है। इतनी कड़ी मेहनत के बाद भी इस गरीब नायिका को एक वक्त का भोजन भी नहीं मिल पाता है। सूखी रोटियाँ थाली में रखकर माँ से दाल की फरमाईश करती है, तब माँ कहती है– ''रात में बनेगी, बेटी ! जब सब घर में होंगे।''[3] यह निर्धनता की स्थिति है। 'यहीं तक' कहानी में पिता के पलायनकारी प्रवृत्ति ने सारा बोझ पुत्र पर लाद दिया है। पिता की सारी जिम्मेदारी पुत्र को संभालनी पड़ती है, साथ–ही उसकी माता को मशीन चलाकर घर का निर्वाह करना पड़ता है।

'अमूर्त कुछ' कहानी में गरीबी इतनी थी कि कप्पी के पिता का दाह–कर्म माँ का मंगलसूत्र बेचकर करना पड़ा था। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण कप्पी पिता की मृत्यु के पश्चात् आठवीं तक पढ़ाई कर पाता है और दीनता के कारण किताबों का थैला नदी में फेंक आता है। नौकरों की समस्याओं का चित्रण भी राजी सेठ की कहानियों में मार्मिकता के साथ हुआ है। उच्चवर्गीय धनाढ्य वर्ग अपने नौकरों को देश–दुनिया की खबर से बेखबर रखना चाहता है, किंतु इन धनाढ्य वर्ग को– ''नौकर चाहिए, जड़–गंवार, गधेसू, पिद्दू नौकर, जिसके चेहरे पर कोई सपना चिपका हुआ न हो।''[4] इस प्रकार उच्चवर्ग को सिर्फ नौकर चाहिए, जिसकी इंसानी पसलियाँ आसानी से तोड़ी जा सकती है। यदि निम्नवर्ग पढ़–लिख गया तो उच्चवर्ग की स्वार्थ– पूर्ति कैसे होगी ?

'यात्रा–मुक्त' कहानी में किशना और उसके बापू मालकिन द्वारा शोषित एवं प्रताड़ित हैं। बापू के बीमार पड़ने से मालकिन उसे बापू के स्थान पर काम में लगा देती है। पढ़ने–लिखने की उम्र में वह बापू की देख–रेख और मजदूरी करता है। अतः आर्थिक रूप से कमजोर परिवार का होने के कारण किशना की पढ़ाई छूट जाती है और निर्धनता उसका पीछा नहीं छोड़ती है।

'आमने–सामने' कहानी में लेखिका ने नौकरों की समस्या का चित्रण किया है। उच्चवर्गीय नायिका स्वार्थ–सिद्धि एवं बच्चों की देख–रेख के लिए नौकर को बंधुवा मजदूर बनाकर रखती है, जिससे नायिका का लेखन–कार्य एवं पढ़ाई अच्छे से हो सके। नौकर वहाँ से निकलकर अच्छी नौकरी करना चाहता है, किंतु यह संभव नहीं है क्योंकि नायिका का दबाव उस पर है, जिसके चंगुल से वह छूट नहीं पाता और आजीवन छटपटाता रह

जाता है। निम्नवर्ग हमेशा उच्चवर्ग द्वारा शोषित एवं पीड़ित है, वह ताउम्र कड़ी मेहनत करके भी अपना व अपने बच्चों का भविष्य उज्ज्वल नहीं कर पाता। इसी तरह घिसते–पिटते हुए उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

निष्कर्ष

राजी सेठ की कहानियों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वह सामाजिक व्यवस्था के प्रति सचेत एवं जागरूक हैं। उनके अधिकांश कहानियों में निम्नवर्गीय पात्र आर्थिक तंगी, निर्धनता, गरीबी की समस्या, पारिवारिक जिम्मेदारियों एवं उच्चवर्गीय धनाढ्य वर्ग के दबाव में जूझते प्रतीत होते हैं। निम्नवर्ग सदैव संकट तले दबे रहकर उच्चवर्ग की प्रताड़ना से पीड़ित एवं शोषित होते रहे हैं। इन्हीं आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं को लेखिका ने सामाजिक धरातल पर यथार्थता के साथ उजागर करने का प्रयास किया है।

संदर्भ सूची

1. सेठ, राजी. *अंधे मोड़ से आगे.* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1979, पृ. 30.
2. सेठ, राजी. *तीसरी हथेली.* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1981, 123.
3. सेठ, राजी. *तीसरी हथेली.* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1981, 58.
4. सेठ, राजी. *यह कहानी नहीं.* दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण, 2004, पृ. 54.

****